

## मूर्खमंडली-पंचतंत्र

एक पर्वतीय प्रदेश के महाकाय वृक्ष पर सिन्धुक नाम का एक पक्षी रहता था । उसकी विष्ठा में स्वर्ण-कण होते थे । एक दिन एक व्याध उधर से गुजर रहा था । व्याध को उसकी विष्ठा के स्वर्णमयी होने का ज्ञान नहीं था । इससे सम्भव था कि व्याध उसकी उपेक्षा करके आगे निकल जाता । किन्तु मूर्ख सिन्धुक पक्षी ने वृक्ष के ऊपर से व्याध के सामने ही स्वर्ण-कण-पूर्ण विष्ठा कर दी । उसे देख व्याध ने वृक्ष पर जाल फैला दिया और स्वर्ण के लोभ से उसे पकड लिया ।

उसे पकडकर व्याध अपने घर ले आया । वहाँ उसे पिंजरे में रख लिया । लेकिन, दूसरे ही दिन उसे यह डर सताने लगा कि कहीं कोई आदमी पक्षी की विष्ठा के स्वर्णमय होने की बात राजा को बता देगा तो उसे राजा के सम्मुख दरबार में पेश होना पड़ेगा । संभव है राजा उसे दण्ड भी दे । इस भय से उसने स्वयं राजा के सामने पक्षी को पेश कर दिया ।

राजा ने पक्षी को पूरी सावधानी के साथ रखने की आज्ञा निकाल दी । किन्तु राजा के मन्त्री ने राजा को सलाह दी कि, "इस व्याध की मूर्खतापूर्ण बात पर विश्वास करके उपहास का पात्र न बनो । कभी कोई पक्षी भी स्वर्ण-मयी विष्ठा दे सकता है ? इसे छोड दीजिये ।" राजा ने मन्त्री की सलाह मानकर उसे छोड दिया । जाते हुए वह राज्य के प्रवेश-द्वार पर बैठकर फिर स्वर्णमयी विष्ठा कर गया; और जाते-जाते कहता गया :-

"पूर्व तावदहं मूर्खो द्वितीयः पाशबन्धकः ।

ततो राजा च मन्त्रि च सर्वं वै मूर्खमण्डलम् ॥

अर्थात्, पहले तो मैं ही मूर्ख था, जिसने व्याध के सामने विष्ठा की; फिर व्याध ने मूर्खता दिखलाई जो व्यर्थ ही मुझे राजा के सामने ले गया; उसके बाद राजा और मन्त्री भी मूर्खों के सरताज निकले । इस राज्य में सब मूर्ख-मंडल ही एकत्र हुआ है ।

## भुक्तभंरुली-पं०३३

एक पत्रडीय प्रेम के भला काय वर पर भिन्नक नाम का एक पत्नी रहता था। उसकी विधवा भै भूल-कल्ले केते थे। एक दिन एक वृण उतर मे गुणर रहता था। वृण के उसकी विधवा के भूलभयी केने का लन नलीं था। उभमे मभुव था कि वृण उसकी उपेक्षा करके मुगे निकल एता। किन्तु भुक्त भिन्नक पत्नी ने वर के उपर मे वृण के भाभने की भूल-कल्ले-पुल विधवा कर दी। उमे दोप वृण ने वर पर एल दिला दिया और भूल के लेह मे उमे पकड़ लिया।

उमे पकड़कर वृण अपने घर ले गया। वलीं उमे पिण्डे मे राप लिया। लेकिन, दुभरे की दिन उमे घर घर भउने लगा कि कलीं केरे मुदभी पत्नी की विधवा के भूलभय केने की गउ राए के गउ दोगा ते उमे राए के मभुप दरगार मे पेम केना पड़ेगा। भंरुव के राए उमे दण्डी है। उभ हय मे उभने भुयं राए के भाभने पत्नी के पेम कर दिया।

राए ने पत्नी के प्री भावणनी के भाष रापने की मुल्ल निकाल दी। किन्तु राए के भत्री ने राए के भलाए दी कि, "उभ वृण की भुक्तपुल गउ पर विमा वाम करके उपलाम का पाउ न गने। कही केरे पत्नी ही भूल-भयी विधवा है मकउ है? उमे केरु दीएये।" राए ने भत्री की भलाए भानकर उमे केरु दिया। एते

काए वरु राए के प्रेम-मर पर वैंकर ढिर भूलभयी विष्टा  
कर गघा; उर एउ-एउ करुता गघा :-

"प्रवं उवदं भुंति द्वितीयः पामग्नकः। उते राए म भन्ति म भवं  
वै भुवभङ्गलभा ॥

मरुता, परले ते मै की भुव घा, एभने वृण के भाभने विष्टा की;  
ढिर वृण ने भुवता ढिपलारं ऐ वृदू की भुए राए के भाभने ले  
गघा; उमके गद राए उर भन्ती ही भुंति के भरुए निकले।  
उम राए मै म भुव-भङ्गल की एकडु रुमु है।

मनुवाए - कुलमीप पर